डॉ० रामदेव झा

जन्म : 3 मई 1936 ई०।

जन्म-स्थान : दरभंगा जिलान्तर्गत कबिलपुर गाम।

कृति : 'एक खीरा : तीन फाँक', 'मनुक सन्तान' (कथा संग्रह); 'उमापति', **'मैथिली शैव साहित्य', 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका'** (समीक्षात्मक ग्रंथ); नेपालमे रचित मैथिली नाटक नन्दीपति-गीतमाला, रामविजय नाट ओ 'हरगौरी विवाह' आदिक संपादक तथा अनेक आलोचनात्मक निबन्ध।

कथा, एकांकी, कविता, आलोचना आदि विविध विधाक प्रणयन करबामे समर्थ डॉ० रामदेव झा समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे मूलतः कथाकार छथि। मुदा हुनक विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथ ओ निबंध सभक विद्वतापूर्ण दृष्टिकोणकेँ सेहो कम नहि कहल जा सकैछ। मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागमे अध्यापन कार्यमे संलग्न रहलाह।

पाठ-सन्दर्भ : राष्ट्रीयताक भावनासँ ओत-प्रोत निबन्ध।

भारत : राष्ट्र ओ राष्ट्रधर्म

भूमिक दृष्टिएँ भारत आइ बहुत किछु संकुचित भऽ गेल अछि। ओकर अपन अंग सभ कटि-कटि कऽ विच्छिन्न होइत गेलैक अछि। ओ विच्छिन्न भूभाग समस्त प्राचीन राष्ट्रीय सम्पदासँ अपन सम्बन्ध तोड़ि लेलक अछि।

हिमालयसँ कन्याकुमारी धरिक जे भू-भाग भारत राष्ट्रक नाम पर अवशेष रहि गेलैक अछि तकरो विच्छिन्न भऽ जयबाक आशंका दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक। प्रत्येक प्रान्त, जनपद, जनसमुदाय, भाषा आदिकेँ मूलतः भारत-राष्ट्रसँ भिन्न स्वतंत्र रूपमे उत्थापित करबाक प्रच्छन्न षड्यन्त्र चलि रहल छैक। किन्तु जाहि एकाइ सभकेँ एना ठाढ़ कयल जाइत छैक से सभ की निरपेक्ष एकाइ थिक ? की, कोनो एहन सबल सूत्र नहि छैक जे एकरा सभकेँ जोड़ैत होइक ?

भारतक तुलना फूलक एकटा मालासँ कयल जाइत छैक जाहिमे विभिन्न जाति, धर्म, संस्कृति ओ भाषा आदिक संकलन-सग्रंथन कयल गेल छैक। मालामे की रहैत छैक ? विभिन्न गाछक फूल सभ खोँटि-खोँटि कऽ ओकरा एक सूत्रमे गाँथल जाइत छैक। सूत्र रहैत छैक निर्जीव। जखने ओ सूत्र कोनो स्थल पर क्षीण वा दुर्बल भऽ कऽ टूटि जाइत छैक तखने ओहि मालाक फूल सभ विकीर्ण भऽ जाइत छैक। तँ की भारत राष्ट्र तेहने माला थिक ? कथमपि नहि।

अमेरिका अथवा रूसक तुलना एहन मालासँ कयल जा सकैत अछि। कारण, विभिन्न स्वतन्त्र, असमान एवं असम्पृक्त जनसमुदायसँ ओकर संरचना भेल छैक। ओहि ठाम औखन धरि समीकरणक प्रक्रिया चलि रहल छैक। एहि प्रक्रियाक परिणामो सुखद ओ उत्साहवर्द्धक भेलैक अछि। ओहि

दुनू राष्ट्रक समस्त भू-भागक वासी अपनाकेँ एक राष्ट्रक रूपमे अनुभव कऽ रहल छथि। रूसमे बसनिहार विभिन्न यूरोपीय ओ एशियाइ जनसमुदाय अपनामे एकात्मभावक अनुभव करैत अपनाकेँ रूसी कहबामे गौरवक अनुभव करैत छथि। तहिना यूरोप, अफ्रिका, एशियाक विभिन्न देशसँ आव्रजित जन-समुदाय अमेरिकामे पुनर्वासित भऽ अमेरिकी राष्ट्रक एक अभिन्न मूर्त्ति ठाढ़ कऽ लेलनि अछि। ओहिठाम आब ने क्यो जर्मन अछि, ने फ्रेंच, ने अंगरेज। सभ अमेरिकन थिकाह। अपनाकेँ अमेरिकने कहबामे गौरव ओ आत्मतोषक अनुभव करैत छथि।

भारतमे से स्थिति नहि अछि। भारतमे भिन्न-भिन्न एकाइकेँ समवेत कऽ एक राष्ट्र नहि बनाओल गेल अछि, ने बनाओल जा रहल अछि। तेँ मालासँ एकर उपमा देब ठीक नहि अछि। आचार्य विनोवा भावे भारत-राष्ट्रक तुलना वटवृक्षसँ कयलनि अछि। वटवृक्षसँ भारतक राष्ट्रीय स्वरूपक बिम्बक अंकन भऽ सकैत अछि। वटवृक्ष अत्यन्त विशाल एवं दीर्घायु होइत अछि। ओकर विशाल मूल धरतीमे बहुत नीचाँ धरि गड़ल रहैत छैक तथा ओकर विशाल-विशाल शाखा-प्रशाखा सभ चारूकात पसरल रहैत छैक, ओ शाखा सभ देखबामे एक दोसरासँ फराक ओ भिन्न लगैत अछि किन्तु सभक सम्बन्ध एके मूलसँ रहैत छैक। एके मूलसँ जीवनरस ग्रहण करैत रहैत अछि। यदि समय संयोगे कोनो शाखा टूटि कऽ खसियो पड़लैक तथापि वटवृक्षक अस्तित्वक विलोप नहि होइत छैक। हजारो हजार वर्षसँ भारत-राष्ट्र वटवृक्षे जकाँ विद्यमान रहल अछि, भविष्योमे विद्यमान रहत।

भारतकेँ विभिन्न सभ्यता, संस्कृति, जाति, धर्म, परम्परा आदिक भौतिक सम्मिश्रण मानब संगत ओ समीचीन नहि अछि। भारत तँ एहि सभसँ बनल यौगिक तत्व थिक जकरा सरलतासँ फराक नहि कयल जा सकैछ।

राष्ट्र की थिक ? ओकर स्वरूप की थिकैक? के थिकाह राष्ट्रीय जन ? राष्ट्रक प्रति हुनक की कर्तव्य ओ धर्म ? एहि सभक सम्बन्धमे चिन्तन ओ विचारमन्थनमे चिन्तक, विचारक एवं नेतृत्ववर्ग सतत काल संलग्न रहैत छथि। किछु व्यक्ति ओकरा स्पष्ट कऽ निर्मल धारणा समाजक

समक्ष प्रस्तुत करऽ चाहैत छथि तँ किछु जन-भ्रान्तिक कुहेससँ एहि सत्यकेँ और आच्छादित करबाक प्रयत्नमे सतत संलग्न छथि। समाज अनिर्णयक चतुष्पथ पर आबि विमूढ़ भेल ठाढ़ अछि। किन्तु विमूढ़ताक ई स्थिति अधिक दिन धरि बनल रहत तँ ओ समस्त राष्ट्रेक हेतु आत्मघातक भऽ जायत। राष्ट्रक यथार्थ परिकल्पनाक स्पष्ट होयबासँ पूर्वहि ओकर मूलभूत तत्व सभ ध्वस्त भऽ जायत।

राष्ट्र राजनीतिक सीमारेखाक अन्तर्गत समेटल भूमिखंडे मात्र नहि थिक । से यदि रहैत तँ सहारा मरूभूमि सन विशाल भू-भाग सेहो एकटा राष्ट्र रहैत। निर्जीव ओ निष्प्राण भू-भाग मात्र राष्ट्र कोना भऽ सकैत अछि ? राष्ट्र तँ अछि सशरीर, सप्राण, सवाक्, आत्मावान् एवं जिजीविषु। राष्ट्र किछु दिन, किछु मास, वा किछु वर्षमे सम्मेलन, आयोजन वा विधानसँ नहि बनाओल जा सकैछ। राष्ट्र सहस्रो वर्षक साधनाक परिणाम थिक। ओकर आदि सृष्टि सुदूर अतीतमे गड़ल रहैत छैक आ भविष्य धरि विद्यमान रहबाक जिजीविषा रहैत छैक।

राष्ट्रक एक-एक अंगक व्याख्या करब तँ ओहिमे देहक स्थान भेटतैक भूमिकेँ। भूमि वस्तुतः राष्ट्रक दैहिक आकार थिकैक। जहिना मनुष्यक देह होइत छैक तहिना भूमि सेहो राष्ट्रक देह थिकैक किन्तु प्राणक अभावमे देह निष्क्रिय रहैत छैक। प्राण रहने ओ क्रियाशील की जीवन्त रहैत छैक। राष्ट्रोक प्राण थिकैक ओहि भूमिक निवासीजन। देह ओ प्राणक अछैत वाक्केर अभावमे मनुष्य अकार्यक रहैत अछि। ओ अपन अनुभूति, अपन भावना, अपन कल्पना, अपन कामना प्रकट नहि कऽ सकैछ। ओकर इच्छा ओ आकांक्षा पाथर तरमे दबल दूबि जकाँ म्रियमाण भऽ जाइत छैक। राष्ट्रक सम्बन्धमे यैह कहल जा सकैछ। राष्ट्रक वाक् वा वाणी थिकैक ओकर भाषा, साहित्य एवं कला। निजी भाषा, साहित्य ओ कलाक अभावमे ओ सर्वथा मूक रहत। देह, प्राण ओ वाक्– एहि तीनूक संग सभसँ आवश्यक अछि आत्माक अवस्थिति। शरीरे जकाँ राष्ट्रोक हेतु आत्मा अपेक्षित छैक। राष्ट्रक आत्माक परिचय प्राप्त कयल जा सकैछ। ओही आत्माक स्वर, साहित्य एवं कलामे अभिव्यक्त तथा मुखर होइत छैक। अतः उपर्युक्त तत्त्व सभक

समुच्चये राष्ट्र थिक। एहि तत्त्व सभक समन्वित भेले पर राष्ट्रक अभिधान सार्थक होइत अछि। एहिमेसँ एकोटाक अभावमे राष्ट्रक यथार्थ स्वरूपक कल्पना नहि कयल जा सकैछ।

देह, प्राण, वाणी एवं आत्माक संग अपेक्षित होइत छैक जिजीविषा-जीबाक इच्छा तथा ओकरा हेतु जीवनीशक्ति। राष्ट्रक जिजीविषा ओ जीवनी-शक्तिक काज करैत छैक आत्मीयता ओ एकात्मभाव । राष्ट्रक भूमि, जन, भाषा, साहित्य, कला, इतिहास, संस्कृति, जीवन-पद्धति आदिक प्रति आत्मीयताक भावना अत्यन्त आवश्यक अछि। ओकर विविध रूप, वर्ग ओ प्रभागक प्रति एकात्मभावना जिजीविषा एवं जीवनी शक्ति प्रदान करैत छैक।

भारतमे चिरकालसँ ई अवयव सभ विद्यमान रहलैक अछि। भारतमे अक्षय जिजीविषा रहलैक अछि आ तकरे परिणाम थिक जे हजार वर्षक आक्रमण, परकीय शासन एवं दमनचक्रमे पिसाइतो आइ धरि एकर मूल राष्ट्रीय स्वरूप अक्षुण्ण रहलैक अछि।

आइ जाहि भू-भागकेँ 'इण्डिया जे भारत थिक' (India that is Bharat) कहल जाइछ से अनादिकालसँ भारतखण्ड, भारतवर्ष, आर्यावर्त्त आदि नामसँ अभिहित ओ प्रख्यात रहल अछि। एहिठामक वासी लोकनिक अपन विशिष्ट जीवन पद्धति रहलनि अछि। ओहिमे जे वैविध्य दृष्टिगोचर होइछ से सतही थिक। समस्त भारतक जीवनसरणिक मूलमे एकत्वक सूत्र विद्यमान छैक। एके मूलस्रोतसँ जीवन-रस ग्रहण करैत अछि। भारत ओहि समष्टिक नाम थिकैक जे कहियो व्यष्टि नहि भेल। अपन समष्टिगत युगजीवी सभ्यता ओ संस्कृति, इतिहास ओ परम्परा, विचार ओ दर्शन, साहित्य ओ कला, अपन विशिष्ट जीवन-पद्धतिसँ अज्ञान तिमिराच्छन्न संसारकेँ ज्ञानरश्मिसँ आलोकित करैत 'कृण्वन्तम् विश्वमार्यम्'क महान् उद्देश्यकेँ चरितार्थ करैत रहल अछि। अतः एहि सभक समुच्चये भारतक राष्ट्रीय स्वरूप थिक।

कोनो प्रकारक शासन-पद्धति, समाज व्यवस्था एवं उपासना-पद्धतिसँ एकर विरोध नहि भऽ सकैछ यदि ओ भारतक एहि स्वरूपकेँ स्वीकार, अंगीकार एवं आत्मसात कऽ कऽ चलैत अछि। भारतक एहि स्वरूपक प्रति आस्था, श्रद्धा ओ भक्ति थिक राष्ट्रीयता। यैह थिक राष्ट्रधर्म। एहि धर्मकेँ धारण कयनिहारे थिकाह राष्ट्रीय। वैह थिकाह भारतीय। भारतमे रहियो कऽ जे भारतक एहि महिमामय मूर्तिक दर्शन अपन आत्मपटल पर नहि करैत होथि, ओहि मूर्त्तिक चित्रांकन अपन हृदय फलक पर नहि कयने होथि ओ भारतीय कोना भऽ सकैत छथि? राष्ट्रीय कोना भऽ सकैत छथि? स्वर्गीय वल्लभ भाइ पटेलक शब्दमे प्रत्येक भारतीय अनुभव करय जे– हमर देशक प्राचीन परम्पराक जे उत्तराधिकार हमरा भेटल से हमरा सभक गर्वक वस्तु थिक। हम सभ एके रक्त ओ भावनाक बन्धनसँ बान्हल छी। क्यो हमरा सभकेँ भिन्न-भिन्न खण्डमे नहि बाँटि सकैत अछि। जकरामे ई भावना मानस-धर्मक रूपमे स्थित भऽ गेल छैक ओकरे यथार्थ राष्ट्रीय व्यक्तिक विशेषण देल जा सकैछ।

आइ रूस ओ अमेरिका जकाँ भारतक राष्ट्रीय स्वरूपक निर्माणक समस्या नहि छैक। ओकर राष्ट्रीय स्वरूपक संरक्षणक समस्या छैक, संजोगबाक समस्या छैक। तेँ एहि वयोवृद्ध भारत राष्ट्रक अहर्निश कल्याण-चिन्तन ओ तदनुसार आचरण करब प्रत्येक राष्ट्रीय जनक कर्त्तव्य थिक।

●

शब्दार्थ : जिजीविषु = जीबाक इच्छा रखनिहार; अभिधान = नाम, उपाधि; समष्टि = सामूहिकता, संपूर्णता; व्यष्टि = समष्टिक विलोम शब्द।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. भारतक तुलना एक फूलक मालासँ किएक कयल गेल अछि ?
2. आचार्य बिनोबा भावे भारत राष्ट्रक तुलना कोन गाछसँ कयलनि अछि?
3. राष्ट्रक दैहिक आकार की थिकैक ?
4. राष्ट्रक वाणी की थिकैक ?
5. आइ जे भारत अछि ओकर नाम की सभ छल ?

6. एहि निबन्ध मे भारतक अतिरिक्त कोनो आन देशक चर्चा भेल अछि की नहि? यदि हँ तँ ओहि देश सभक नाम लिखू।

7. राष्ट्रधर्म की थिक?

गतिविधिः

1. पाठमे भारतक अतिरिक्त जाहि देश सभक नाम आयल अछि, ओहि देश सभक विषयमे शिक्षकसँ वार्त्तालाप करू।
2. राष्ट्र ओ राष्ट्रधर्मक विषयमे छात्र लोकनि अपनामे चर्च करू।
3. राष्ट्रक रक्षा अत्यावश्यक अछि तेँ शिक्षार्थी शिक्षकसँ राष्ट्रक रक्षा कोन रूपेँ करबाक चाही ताहि पर वार्त्ता करथि।
4. पाठमे प्रयुक्त निम्नलिखित संज्ञा शब्दसँ विशेषण बनाऊ :
राष्ट्र, प्रान्त, इतिहास, धर्म, जाति एवं भाषा।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे प्रत्येक छात्रकेँ ओ भारतक सजग प्रहरी बनयबाक चेष्टा करथि।

(ख) राष्ट्रीय एकतासँ सम्बन्धित कोनो आन लेख जँ शिक्षककेँ भेटनि, तँ तकरो जानकारी देबाक चेष्टा कयल जाय।

(ग) राष्ट्रीय महत्त्वक विभिन्न ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक विरासतक प्रति छात्रक जिज्ञासाकेँ प्रेरित करैत ओकर संरक्षणक प्रति जागरूक बनाओल जयबाक प्रयोजन अछि।

(घ) एहि लेखमे अनेक देशक नागरिकक नाम आयल अछि, यथा– रूसी, जर्मन, फ्रेंच, अंगरेज, अमेरिकन आदि। शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइछ जे ओ निम्नलिखित देशक मुद्रा, भाषा एवं नागरिकक ज्ञान छात्रकेँ देथि :

नीदरलैण्ड, इराक, चेकोस्लोवाकिया, जापान, थाइलैण्ड, पुर्तगाल एवं चीन।